बाबा हमारा लेकर आया घर चलने का संदेश।
त्यागो अब देह अभिभान छोड़ो ये बेगाना देश।
बहुत रो लिए बच्चे देह के रिश्तों में उलझकर।
देखो सबको आत्मा खुद को आत्मा समझकर।
परिवर्तन की राह पर चलना बहुत सम्भलकर।
बदलना है जग सारा पहले खुद को बदलकर।
करनी है तैयारी हमको अपने घर में चलने की।
आदत डालनी है हमें देहि अभिमानी रहने की।
भरते जाना है खुद में गुण और शक्तियाँ अपार।
ज्ञान की करो लेनदेन गुणों का करो व्यापार।
हर दिन हम सब अपनी उन्नति करते ही जाएँ।
शुद्ध वाइब्रेशन फैलाकर जग को पावन बनायें।
जिस दिन अपनी रूह शुद्ध पावन बन जाएगी।
ऐसी पतित दुनिया में फिर वो ना रह पाएगी।
देहि अभिमानी रहने का इतना करो अभ्यास।
रूह निकले अपनी देह से बिना किए आवाज।
ना कोई पीड़ा हो और ना हो कृन्दन की आवाज।
खुशी खुशी रूह अपनी घर की और हो परवाज।
आएंगे नई दुनिया में जब होगा उसका आगाज।
सुंदर और निराला होगा सबके जीने का अंदाज।

ॐ शांति